श्री साईं महात्मय - हिंदी काव्य

(हिंदी भावार्थ के साथ)

आध्यात्मिक एवं सांसारिक प्रसन्नतादायक काव्य

(श्री साईं सच्चरित्र पर आधारित)

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान पर्थ (पंजीकृत)
ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

श्री साईं महात्मय - हिंदी काव्य

(हिंदी भावार्थ के साथ)

आध्यात्मिक एवं सांसारिक प्रसन्नतादायक काव्य

(श्री साईं सच्चरित्र पर आधारित)

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ (पंजीकृत)

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ई-मेल: srkperth@outlook.com
टेलीफोन: + ६१ (०८) ९४०१ १५४३

विषय-सूची

समर्पण 5
निवेदन 6
श्री साईं महात्मय - हिंदी काव्य 7
श्री साईं महात्मय काव्य रचना हेतु 7
भगवान् श्री साईं - अद्‌भुत अवतार 11
कष्ट एवं दुर्भाग्य निवारण 22
संतति प्रदान 31
फलश्रुति (पठन/ श्रवण साईं महात्मय) 36
शिर्डी साईं बाबा - संक्षिप्त जीवन परिचय 41
कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा 48

समर्पण

ॐ श्री साईं नमो नमः, ॐ जय जय श्री साईं नमो नमः,
सद्गुरु श्री साईं नमो नमः
परम पूज्य श्री गुरुदेव साईं को सादर समर्पित

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति |
तदहं भक्तयुपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः || श्रीमद्भागवद्गीता ९-२६ ||

यदि कोई प्रेम तथा भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ |

निवेदन

भारत एवं समस्त विश्व में शिर्डी साईं बाबा कोई अनजाना नाम नहीं। वह एक महान संत थे। नश्वर चीजो का उन्हें कोई मोह नहीं था। उनका मुख्य उद्देश्य भक्तों को आत्मिक अनुभूति कराना था। वे लोगो को प्रेम, दया, मदद, समाज कल्याण, संतोष, आंतरिक शांति, भगवद भक्ति एवं गुरु भक्ति का पाठ पढ़ाते थे।

उनकी शिक्षाओं में से प्रमुख है, धार्मिक भेदभाव नहीं करना। साईं बाबा अपने भक्तों को हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों का पाठ पढ़ाते थे। वह शिर्डी ग्राम में एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में रहते थे जिसे वह द्वारकामाई नाम से पुकारते थे।

श्री हेमाडपंत दाभोलकर जी ने शिर्डी साईं बाबा का जीवन चरित्र चित्रण अपनी पुस्तक 'श्री साईं सच्चरित्र' में बड़े ही सुचारू रूप से किया है। यह पुस्तिका 'श्री साईं महात्मय काव्य' उसी पर आधारित शिर्डी साईं बाबा के महात्मय में कुछ काव्य शब्द हैं। शिर्डी साईं बाबा का महात्मय लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। महान संतों का चरित्र चित्रण हम जैसे साधारण व्यक्ति कहाँ कर सकते हैं, फिर भी यह उनके प्रति हमारा सम्मान और आदर भाव है। आशा है हमारे भाव आपको अवश्य ही प्रिय लगेंगे।

आपका अपना, प्रभु के चरणों में,

यतेंद्र शर्मा
अध्यक्ष एवं संस्थापक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ (पंजीकृत)
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

श्री साईं महात्मय - हिंदी काव्य

श्री साईं महात्मय काव्य रचना हेतु

श्री श्यामा उवाच

की श्यामा करबद्ध प्रार्थना, सुनो साईं मेरी आराधना ।
दो हेमांडपंत यह आज्ञा, लिखें साईं-सच्चरित्र प्राज्ञा ।। (१)

भावार्थ: *श्री श्यामा जी कर बद्ध प्रार्थना करते हुए भगवान् श्री साईं से बोले, 'हे प्रभु साईं, आप हेमांडपंत जी को साईं सच्चरित्र लेखन की आज्ञा दीजिए।'*

हो तब जन-मंगल गोसाईं, कर प्रार्थना पड़े पग साईं ।
उठो भक्त छोड़ो पग मेरे, बोले प्रभु तब वचन सुरीले ।। (२)

भावार्थ: हे गोसाईं, इससे जन-मंगल होगा। ऐसी प्रार्थना करते हुए श्री श्यामा जी भगवान् श्री साईं के चरणों में लोट गए। तब भगवान् श्री साईं ने उनको उठाया और मधुर वचन बोले, 'हे प्रिय भक्त, चरणों से उठो।'

भगवान् श्री साईं उवाच

सुन श्यामा की जन हित वानी, हुआ हिय साईं हर्षानी ।
बोले लिखें हेमांडपंत कहानी, आज्ञा तुम मेरी ये जानी ।। (३)

भावार्थ: भगवान् श्री साईं बोले, 'हे श्यामा, तेरी जन कल्याण करने वाली वाणी सुन हमारा हृदय अत्यंत हर्षित हुआ। मैं हेमान्डपंत को कथा लिखने की आज्ञा देता हूँ।'

जो पढ़े सुने यह श्री सच्चरित्र, होए हिय उसका पवित्र ।
भला करूँगा मैं बन मित्र, हो सुगन्धित जग जस इत्र ।। (४)

भावार्थ: 'जो भी मेरे सच्चरित्र को पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसका हृदय पवित्र हो जाएगा। मैं उसका मित्र बन कर उसका हित करूंगा। उसकी सुगन्धि विश्व में इत्र सामान फलैगी। '

श्रद्धा सों सुमिरें साईं नाम, होंगे रिपु भी मीत समान ।
हो वृद्धि बुद्धि और ज्ञान, हों नर-नारि संत समान ।। (५)

भावार्थ: 'साईं का नाम श्रद्धा से स्मरण करने से शत्रु भी मित्र बन जाएंगे। बुद्धि और ज्ञान में वृद्धि होगी। सभी नर एवं नारी संत समान हो जाएंगे।'

पाए इहलोक धन-धान, परलोक मोक्ष प्रभु का धाम ।
जीवन उसका प्रकाशमान, पाएं संतान अति सम्मान ।। (६)

भावार्थ: 'ऐसा प्राणी इहलोक में धनधान्य एवं मरण पश्चात मोक्ष पाएगा। उसका जीवन हर प्रकार से उज्जवलित होगा। उसकी संतानें अत्यंत सम्मान प्राप्त करेंगी।'

छू न सके मोह व् माया, पाए सब सुख उसकी काया ।
हों कपट काम अलगाया, दुःख कष्ट सभी निर्मूलाया ।। (७)

भावार्थ: मोह माया उसको स्पर्श भी नहीं कर सकती। वह समस्त सुखों का भोग करेगा। छल कपट से दूर रहेगा। सभी कष्टों से उसे छुटकारा मिलेगा।'

हो अखंड भक्ति प्रभु में, सहज तरे वह कलियुग में ।
सचेत स्वप्न या ध्यान में, पढ़े सच्चरित्र किसी दशा में ।। (८)

भावार्थ: 'ऐसे प्राणी की प्रभु में अखंड भक्ति जाग्रत होगी। कलियुग का प्रभाव नहीं व्यापेगा। इस महात्मय को किसी भी अवस्था - सचेत, स्वप्न अथवा ध्यान, में पढ़ा अथवा सुना जा सकता है।'

साथ सब हों कुटुंब मित्र, लें आनंद श्रवण सभी एकत्र ।
कर अर्पण पुष्प और पत्र, करें पूजन वह किसी सत्र ।। (९)

भावार्थ: 'मित्र एवं सभी परिवार के साथ एकत्र होकर (साईं महात्मय के पठन एवं सुनने का) आनंद लें। (साईं को) पुष्प पत्र आदि अर्पण कर किसी भी समय पूजन करें।'

श्री हेमांडपंत उवाच

सुनी मधुर साईं की वाणी, गदगद भये उपस्थित प्राणी ।
करबद्ध कहें तब हे चक्रपाणी, हैं हम भेड़ साईं चराणी ।। (१०)

भावार्थ: साईं के मधुर वचन सुनकर सभी उपस्थित प्राणी गदगद हो गए। सभी हाथ जोड़कर कहने लगे, 'हे भगवन, हम आप की भेड़ हैं, और आप हमारे चरवाहे हैं।'

पड़े हेमांडपंत तब साईं चरना, त्राहि त्राहि हे प्रभु रक्षना ।
भर नैन अश्रु बोले यह वचना, लीला साईं है अति गहना ।। (११)

भावार्थ: तब, 'त्राहि त्राहि, हे रक्षक साईं', कहते हुए हेमांडपंत उनके चरणों में गिर पड़े। नैनों में अश्रु भरकर वह बोले, 'हे साईं, आपकी लीला अत्यंत गूढ़ है।'

प्रार्थना

प्रभु साईं तुम हरि अवतार, हैं शोकमोचन जग प्राणाधार ।
है श्रद्धा हमरे हिय आगार, दो साईं सबूरी तुम प्रतिकार ।। (१२)

भावार्थ: हे साईं, आप प्रभु के अवतार हैं। आप जग के शोक दूर करने वाले (हमारे प्राणों के) आधार हैं। हमारे हृदय में आपके प्रति अनन्य श्रद्धा है। आप हमें धैर्य और संतोष प्रदान कीजिए।

स्वीकार करो साईं अर्पण, करें नैवेद्य पंचामृत समर्पण ।
सता रहे हमें भौतिक गण, हम अबोध नर नारी भूगण ।। (१३)

भावार्थ: हे साईं, हम आपको नैवैद्य एवं पंचामृत समर्पित कर रहे हैं। हमारा अर्पण स्वीकार कीजिए। हे प्रभु, हम असहाय हैं । हमें इस संसार के पाखंडी लोग सता रहे हैं।

गाएं हम यह साईं माहत्म्य, है तन मन स्वामी में तन्मय ।
दो हमें सुख शान्ति आत्मय, बनें हम अनवरत प्रज्ञामय ।। (१४)

भावार्थ: हे साईं, हम तन मन एकाग्र कर इस साईं महात्मय का गान कर रहे हैं। हे प्रभु, हमें सुख शांति प्रदान कीजिए ताकि हम निरंतर ज्ञान प्राप्त कर सकें। ।

भटक रहे हम इस जग में, हैं जन्मांतर के कर्मफल में ।
लगे मन समाज उत्थान में, हो निःस्वार्थ भावना हिय में ।। (१५)

भावार्थ: हे साईं, हम इस जगत में अपने जन्म जन्मांतर के कर्मों के अनुसार भटक रहे हैं। (हे साईं, हमें प्रेरणा दो) हम निःस्वार्थ भाव से समुदाय के उत्थान के लिए कार्य करें।

हृदय हमारे संतोष शान्ति, ना व्यापे कभी कोई भ्रान्ति ।
जग में फैले भव्य कान्ति, गाएं गुण भगवन हियान्ति ।। (१६)

भावार्थ: (हे साईं) हमारे मन में सदैव संतोष एवं शांति व्याप्त रहे। हमें कभी कोई संशय न हो। विश्व में हमारा यश फैले। हम सदैव हृदय से आपका गुणगान करते रहें।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

भगवान् श्री साईं - अद्‌भुत अवतार

श्री हेमांडपंत उवाच

श्यामा तुम हो भक्त अनंत, बोले उन्नायक श्री हेमांडपंत ।
साईं कृपा हम सब जीवंत, पर तुम अति प्रिय प्रभु नियंत ।। (१७)

भावार्थ: उन्नति का पथ प्रदर्शित करने वाले श्री हेमांडपंत जी श्री श्यामा जी से बोले, 'हे श्यामा जी, आप तो साईं के अनन्य भक्त हैं। हम सभी प्राणीओं पर (यद्यपि) साईं की कृपा है, (परन्तु) आप तो प्रभु के अत्यंत प्रिय हो।'

कहो तथ्य कौन हैं साईं, जो जन्मे धरती देव की नाईं ।
जन्म हेतु है क्या गोसाईं, तस पूछत प्रश्न आँख भर आईं ।। (१८)

भावार्थ: (हे श्यामा जी) आप हमें बतलाइए कि यह साईं कौन हो जिन्होंने इस पृथ्वी पर देव स्वरुप में जन्म लिया है? इन प्रभु के अवतार का क्या कारण है?' यह प्रश्न पूछते हुए उनके नेत्रों में (प्रेम का) जल छलक गया।

श्री श्यामा उवाच

तुम हो पंत बड़े ही ज्ञाता, मैं अनपढ़ मूरख अज्ञाता ।
मति लघु पर बड़ी है बाता, छोटे मुँह न ज्ञान है भाता ।। (१९)

भावार्थ: (श्यामा जी बोले) हे हेमांडपंत जी, आप तो बड़े ज्ञानी हैं। मैं तो एक अनपढ़ मूर्ख अज्ञानी हूँ। मेरी बुद्धि अति लघु, और यह बात बहुत बड़ी है। छोटे मुँह से बड़ी बातें करना शोभा नहीं देता।

अतैव कहूँ मैं साईं प्रेरणा, सुनो हिय धार मेरी यह अर्पणा ।
हैं साईं स्वयं शिव सगुणा, जन्मे धरा हेतु दुःख हरणा ।। (२०)

भावार्थ: फिर भी मैं साईं की प्रेरणा से कहता हूँ। मेरी इस बात को हृदय से सुनो। (साईं) स्वयं महादेव के अवतार हैं जो इस भूमि पर हमारे दुःख दूर करने के लिए अवतरित हुए हैं।

हैं कहे गोस्वामी रामचरित, जब जब होए धर्म विनशित ।
हैं तब प्रभु स्वयं अवतरित, अथवा संत रूप जन्म लेवत ।। (२१)

भावार्थ: गोस्वामी (तुलसीदास जी) ने श्री रामचरितमानस में लिखा है कि जब जब धर्म की हानि होती है, तब तब या तो प्रभु स्वयं अपने रूप में अवतार लेते हैं अथवा किसी संत के रूप में अवतरित होते हैं।

धरें अवतार तब वधें अधर्मा, दें संत रूप में ज्ञान सुधर्मा ।
हरे नेत्र-रोग जस सुर्मा, करें संकट निर्मूल संत सुकर्मा ।। (२२)

भावार्थ: प्रभु जब (स्वयं पूर्ण रूप में) अवतार लेते हैं तो अधर्मियों का वध करते हैं। संत रूप में जन्म लेकर उन्हें धर्म ज्ञान देते हैं। जिस प्रकार सुरमा नेत्र के रोग को हर लेता है, उसी प्रकार संत सभी धर्मीयों के संकट हर लेते हैं।

अस हुआ एक भू अवतारा, आए साईं धर नरहिं शरीरा ।
है लक्ष्य साईं उद्धार हमारा, शिर्डी बना तीरथ जग सारा ।। (२३)

भावार्थ: प्रभु नर शरीर रूप धारण कर साईं अवतार के रूप में आए। उनका उद्देश हमारा उद्धार करना है। उनके शिर्डी निवास से शिर्डी एक तीर्थ बन गया।

है धैर्य शांति साईं आभूषण, रहें सदैव वह साधना रमण ।
करें सम सिद्ध साधक आचरण, साईं श्रेष्ठ संत प्रतीकण ।। (२४)

भावार्थ: शांति ही उनका आभूषण है। वह सदैव साधना में लीन रहते हैं। उनका आचरण एक सिद्धि प्राप्त साधक आदर्श संत के समान है।

पगधोवन है गंगा-जल सम, पीवत मिले फल स्नान संगम ।
चरणामृत पी हो आनंदम, बनें भू-जन सुमंगल शुभम ।। (२५)

भावार्थ: उनका पग धोवन गंगाजल के समान है। यह त्रिवेणी में स्नान करने जैसा शुभ फल देता है। उनके चरणामृत पान करने से प्राणी पवित्र हो जाता है तथा मंगलता एवं शुभता को प्राप्त होता है।

करें साईं सत इच्छा पूर्ति, पाएं भक्त सब कष्टों से मुक्ति ।
साईं लीला सुन हो हिय तृप्ति, ईश्वर प्रेम में बढे आशक्ति ।। (२६)

भावार्थ: (इस महात्मय के पठन /श्रवण से भक्तों की) सभी शुद्ध इच्छाओं की पूर्ती होती है, और उनको सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है। श्री साईं लीला हृदय को प्रसन्न करने वाली है और ईश्वर में श्रद्धा बढ़ाती है।

पाए मन सुख और शान्ति, पाएं मरण जन मोक्ष सद्गति ।
सुनो एक हरि साईं कृति, श्रवण करे सब पाप निवृति ।। (२७)

भावार्थ: (साई लीला) हृदय को सुख और शांति देने वाली एवं मोक्ष और सद्गति देने वाली होती है। सब पापों को हरने वाली साईं की एक लीला का श्रवण करो।

थे दास गनु साईं के भक्ता, करें विचार हिय प्रयाग प्रवृत्ता ।
है त्रिवेणी स्थल अति पुनीता, संगम स्नान सों प्रभु दें मुक्ता ।। (२८)

भावार्थ: दास गणु जी साईं के परम भक्त थे। उन्होंने प्रयाग जाने का हृदय में विचार किया। (उन्होंने सोचा) त्रिवेणी संगम अत्यंत पवित्र है। वहां जा कर स्नान करूँ ताकि प्रभु के आशीष से मुक्ति पाऊँ।

है आवश्यक गुरु की अनुमति, आए वह शिर्डी लेने सम्मति ।
किए पग स्पर्श साईं अधिपति, दो हे गुरु मुझे उचित मति ।। (२९)

भावार्थ: (इस प्रकार की धार्मिक प्रक्रियाओं के लिए) गुरु की आज्ञा आवश्यक है, यह विचारकर (गुरु की आज्ञा लेने के लिए) उन्होंने शिर्डी के लिए प्रस्थान किया। (शिर्डी पहुंचकर) उन्होंने गुरु के चरण स्पर्श किए, और उनसे प्रयाग जाने की आज्ञा माँगी।

बोले मधुर वचन तब साईं, हो सोच सदा रैदास की नाईं ।
मन चंगा और हिय गोसाईं, बहें कठोती पावन गंगा माँईं ।। (३०)

भावार्थ: तब श्री साईं मधुर वचन बोले, '(हे दास गनु) सदैव संत रैदास की भांति सोचना चाहिए। अगर हृदय पवित्र है और उसमें प्रभु का वास है तो कठोती में ही गंगा माँ निवास करती हैं।

नहीं नितांत जाना त्रिवेणी, शिर्डी में ही प्रयाग और वेणी ।
पड़े तब गणु साईं चरणी, बह रहीं पग यमु-गंग जलवेणी ।। (३१)

भावार्थ: (साई बोले) त्रिवेणी जाना कोई आवश्यक नहीं है। (हमारे लिए) यहीं शिर्डी में ही प्रयाग और पवित्र नदी (दोनों) हैं। (साईं के यह वचन सुनकर) तब दास गनु जी ने जैसे ही साईं के चरणों को स्पर्श किया, (उनके चरणों से) उन्होंने गंगा और यमुना की धारा बहते हुए देखा।

जब देखा चमत्कार साईं का, हुआ हिय अचंभित सभी का ।
पड़ पग लें आशीष प्रभु का, करें जयकार ईश्वर रूप का ।। (३२)

भावार्थ: साई का यह चमत्कार देख सब के हृदय अचंभित हो गए। सभी साईं का आशीर्वाद लेने उनके चरणों पर लोट गए। सभी ईश्वर रूप (साईं) की जय जयकार कर रहे हैं।

करें प्रार्थना पड़ साईं चरना, करो पूर्ण प्रभु हमरी कामना ।
निकली तब गनु मुख से रचना, रहम मेरे साईं तुम करना ।। (३३)

भावार्थ: सभी साईं के चरणों पर गिर पड़े, और प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु हमारी इच्छाओं को पूर्ण करो। तभी दास गनु जी के मुख से (कविता रूपी) रचना निकल पड़ी, 'हे मेरे साईं, हम पर सदैव कृपा करते रहना।'

हैं हम मूरख प्रभु तुम ज्ञानी, राह दिखाओ हरि अंधा जानी ।
हम भूजन अभागी अभिमानी, हैं असत अविश्वस्त अज्ञानी ।। (३४)

भावार्थ: (दास गनु जी प्रार्थना करते हैं) हे प्रभु, हम मूर्ख हैं, आप ज्ञानी हैं। हमें अंधा समझते हुए हमारा मार्ग दर्शन करें। हम पृथ्वी वासी तो अभिमानी, अपवित्र, संदिग्ध एवं अज्ञानी हैं।

प्रभु साईं हैं परे सब धर्मा, स्वयं ही सच्चिदानंद सर्वधर्मा ।
ना वह हिन्दू ना हैं मुसलमा, ना कोई जाति जस वर्णकर्मा ।। (३५)

भावार्थ: साईं तो सब धर्म से परे स्वयं ही सब धर्म सच्चिदानंद प्रभु हैं। ना वह हिन्दू हैं ना मुसलमान। उनकी वर्णक्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र) पर आधारित कोई जाति नहीं है।

त्यागे साईं सब इन्द्रिय सुख, हैं अहम् से वह सदैव विमुख ।
है सदैव ईश्वर मालिक मुख, निर्मूल करें वह सब के दुःख ।। (३६)

भावार्थ: सभी इन्द्रिय सुखों का त्याग कर साईं अहंकार से विमुख हैं। 'ईश्वर मालिक' सदैव उनके मुख में रहता है ('ईश्वर ही मालिक है का वह सदैव उच्चारण करते रहते हैं)। सभी के दुःख दूर करने में वह तत्पर रहते हैं।

हैं मूलतः साईं निराकार, लियो अवतार भू नर रूपाकार ।
हेतु जन्म प्रसार प्रेम संसार, है अद्भुत साईं का अवतार ।। (३७)

भावार्थ: यद्यपि साईं मूलतः निराकार हैं, लेकिन उन्होंने पृथ्वी पर नर रूप में प्रेम का संचार करने हेतु जन्म लिया है। यह साईं का अवतार अत्यंत अद्भुत है।

हो उपनिषद वेद या वेदांता, हैं साई सभी ग्रंथन के ज्ञाता ।
दें ज्ञान सदैव अपने भक्ता, समझाएं उन्हें आसक्त चित्ता ।। (३८)

भावार्थ: उपनिषद, वेद, वेदांत सहित सभी ग्रंथों के साईं ज्ञानी हैं। वह सदैव अपने भक्तो को इनका ज्ञान देते हुए आशय समझाते हैं।

ईशावास्य-भावार्थबोधिनी, है ग्रन्थ गूढ़ अबोधिगमयिनी ।
दास गनु चाह करें विवेचनी, दुष्कर परन्तु पर्यालोचनी ।। (३९)

भावार्थ: ईशावास्य-भावार्थबोधिनी एक दर्शन ग्रन्थ है। दास गणु जी इसका विवेचन करना चाहते थे परन्तु उन्हें इसे समझने में अत्यंत कठिनाई हो रही थी।

किए परामर्श अनेक पंडित, न कर सका उन्हें कोई संतुष्ट ।
तब दास गनु हृदय विचारत, संभव साईं सों संदेह-निवृत ।। (४०)

भावार्थ: उन्होंने सभी पंडितों (ज्ञानीओं) से परामर्श किया, परन्तु वह संतुष्ट नहीं हुए। तब उन्होंने हृदय में ऐसा विचार किया कि उनके सभी संदेहों का निवारण साईं द्वारा संभव है।

आए तब शिर्डी समीप साईं, करो संशय दूर मेरे गोसाईं ।
बोले मधुर वचन तब साईं, हो दूर संदेह विले पार्ले जाईं ।। (४१)

भावार्थ: वह (दास गणु जी) साईं के पास शिर्डी आए, और उनसे अपने संशय दूर करने की प्रार्थना की। तब मधुर वचन में साईं बोले, 'तुम विले पार्ले (मुंबई का एक मोहल्ला) जाओ।'

प्रज्ञ दीक्षित काका की कर्मी, करेगी दूर संशय वह सुकर्मी ।
चकित हुए सुन साईं प्रेमी, है निरक्षर काका की कर्मी ।। (४२)

भावार्थ: 'वहां पंडित काका दीक्षित की नौकरानी तुम्हारे सभी संशय दूर करेगी।' (साईं के यह वचन सुनकर) सभी भक्त चकित हो गए। काका दीक्षित की नौकरानी तो अशिक्षित है (वह कैसे संशय दूर कर सकती है?)

समझ सके रहस्य न पंडित, कैसे समझाएगी अशिक्षित ।
साईं तो हैं हरि नियंत, न हों वचन कभी असत्य अनंत ।। (४३)

भावार्थ: जो ज्ञानी पंडित नहीं समझा सके, उसे अशिक्षित नौकरानी कैसे समझा सकती है? (लेकिन दास गणु जी ने सोचा) साईं तो प्रभु के अवतार हैं। हरि के वचन कभी असत्य नहीं हो सकते।

अस गनु सों हृदय विचारा, काका गृह विले पार्ले पधारा ।
मधुर भजन वह सुना सवेरा, है गावत कौन प्रिय स्वरा ।। (४४)

भावार्थ: इस प्रकार हृदय में सोचते हुए दास गणु जी काका (दीक्षित) जी के घर (विले पार्ले) गए। (वहां) प्रातः उन्होंने एक मधुर भजन का स्वर सुना। यह भजन कौन गायक गा रहा है (यह जानने की उनकी उत्सुकता हुई)।

कौतुक हूँ वह गए स्थाना, थी बाई जहां गा रही गाना ।
मांज रही थी वह बर्तना, तन था तन्मय प्रभु के चरना ।। (४५)

भावार्थ: अचंभित हो वह उस स्थान को गए (जहां से मधुर गान का स्वर आ रहा था)। वहां उन्होंने देखा कि नौकरानी यह (मधुर) गाना गा रही थी। वह प्रभु चरणों में तन्मय होकर बर्तन मांजती जा रही थी (और भजन गा रही थी)।

तन पर पहने कपड़ा विदीर्ण, गनु हृदय तब हुआ जीर्ण ।
पूछा काका कौन यह क्षीण, है कर्मी लघु बहन हे प्रवीण ।। (४६)

भावार्थ: तन पर फटे पुराने कपडे थे। यह देखकर दास गणु जी का हृदय दुःखी हो गया। उन्होंने काका (दीक्षित) से पूछा यह निर्धन कौन है? तब उन्होंने बतलाया कि हे संत, यह हमारी नौकरानी की छोटी बहन है।

कृपया दो इसे एक नया अद्धा, मेरी प्रार्थना है कर बद्धा ।
देख गनु हिय अति श्रद्धा, काका तब दीनों एक अद्धा ।। (४७)

भावार्थ: (दास गनु जी काका जी से बोले) मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि इसे आप एक अद्धा (छोटी साड़ी) दे दीजिए। दास गनु जी के हृदय में (निर्धन नौकरानी के प्रति) श्रद्धा देखते हुए, काका (दीक्षित) ने उसे नया अद्धा दे दिया।

पाई साड़ी जस पाया संसारा, था हिय ले रहा हलकारा ।
आई पहन दूसर दिन वारा, हो प्रसन्न धनवान प्रकारा ।। (४८)

भावार्थ: (नई) साड़ी पाकर वह इतनी प्रसन्न हुई जैसे उसे संसार मिल गया हो। उसका हृदय मग्न हो गया। दूसरे दिन उसने वह साड़ी पहनी। एक धनवान की तरह अत्यंत प्रसन्न लग रही थी।

खेलत कूदत दिखी प्रसन्ना, धन्य धन्य हे दयालु अन्ना ।
अगले दिन पुराना परिधाना, चीथड़ ही पहन कर आना ।। (४९)

भावार्थ: खेलती कूदती अति प्रसन्न हो वह काका (दीक्षित) का आभार व्यक्त कर रही थी। अगले दिन (जब वह काम पर आई) उसने वही पुराने चीथड़े कपड़े धारण किए हुए थे।

हिय प्रसन्न नहीं दुःख भावना, पहना जस नया परिधाना ।
गनु हृदय तब अति चकिताना, मर्म गूढ़ अब वह जाना ।। (५०)

भावार्थ: उसका चित्त उसी प्रकार प्रसन्न था जैसे उसने नई साड़ी ही पहन रखी हो। कोई (चहरे पर) दुःख के भाव नहीं थे। दास गनु जी का हृदय अत्यंत चकित हुआ। तब उन्हें गूढ़ रहस्य की अनुभूति हुई।

दुःख सुख तो मनोभावना, नहीं सम्बन्ध धन या निर्धना ।
प्राणी सुखी वही जो माना, दिए सदा प्रभु पर्याप्त साधना ।। (५१)

भावार्थ: दुःख सुख तो मन की भावना है। इसका धनी अथवा निर्धन होने से कोई सम्बन्ध नहीं। वही प्राणी सुखी है जिसने यह मान लिया कि प्रभु ने उसे पर्याप्त दिया है (संतुष्टि की भावना जिसके अंदर है)।

रहे प्रसन्न जो ईश प्रादिनी, लोभ लालच हो अप्रचालिनी ।
है ईशावास्य-भावार्थबोधिनी, संतोष प्रवृत्ति ज्ञान देवनी ।। (५२)

भावार्थ: जो प्रभु ने दे दिया है, उसी में प्रसन्न रहते हुए लोभ, लालच इत्यादि से दूर रहे, यही ज्ञान ईशावास्य-भावार्थबोधिनी ने दिया है।

तब गनु हृदय साईं सराहा, साईं बिन कौन हमें उबारा ।
करें बार बार नमस्कारा, सुमिरत हृदय हो सुख अपारा ।। (५३)

भावार्थ: तब दास गनु जी ने साईं की प्रसंशा की। हे साईं, आपके अतिरिक्त हमें कौन उबार सकता है? (साईं का) हृदय में स्मरण कर वह उन्हें बार बार नमस्कार करते हैं तथा हृदय में अति प्रसन्न होते हैं।

साईं करें मान सब धर्मा, हो हिन्दू सिख या मुसलमा ।
समान हर पर्व की महिमा, उर्स चन्दन या गुरु-पूर्णिमा ।। (५४)

भावार्थ: हिन्दू, सिख अथवा इस्लाम, साईं सभी धर्मों का आदर करते हैं। वह हर उत्सव की महिमा समान मानते हैं चाहे वह (मुसलमानों का) उर्स अथवा चन्दन (समारोह) हो या हिन्दुओं का गुरु-पूर्णिमा।

पर्व राम नवमी या दशहरा, हो ताज़िआ या ईद अवसरा ।
साईं मनाएं सब त्योहारा, संग हिन्दू मुस्लिम भक्तारा ।। (५५)

भावार्थ: राम नवमी हो, दशहरा हो, ताज़िआ हो अथवा ईद उत्सव, साईं अपने सभी हिन्दू एवं मुस्लिम भक्तों के साथ सभी उत्सव मनाते हैं।

हैं साईं सर्व व्यापक दयालु, हैं भक्तन के सदैव कृपालु ।
हैं भक्तों के निःस्वार्थ हितालु, रखें ध्यान सदैव हृदयालु ।। (५६)

भावार्थ: साईं सर्व-व्यापक दयालु प्रभु हैं। भक्तों पर वह सदैव कृपा करते हैं। निःस्वार्थ रूप से सभी का हृदय में ध्यान रखते हुए उनके हित की ही सोचते हैं।

सुनाएं एक कथा साईं की, की प्राण रक्षा जब शिशु की ।
है कथा उन्नीस सौ दस की, घटित दिवस दीपावली की ।। (५७)

भावार्थ: साईं ने किस प्रकार एक शिशु के प्राणों की रक्षा की, यह कथा सुनो। यह (सन) उन्नीस सौ दस के दीपावली दिवस की घटना है।

था दिन शीत तापते अग्नी, दहक रही थी अति उग्र धूनी ।
सहसा डाला कर साईं धूनी, जला हस्त हो अत्यंत वेदनी ।। (५८)

भावार्थ: (साईं) इस शीत दिवस पर बाबा प्रज्वलित धूनी में (हाथ) ताप रहे थे। अचानक उन्होंने अपना हाथ धूनी में डाल दिया। इस कारण हाथ जल जाने से उन्हें अत्यंत पीड़ा हुई।

पीछे खींचे तब साईं श्यामा, हस्त जलायो क्यों सर्वात्मा ।
बोले मधुर वचन परमात्मा, नहीं दुःख जला हस्त श्यामा ।। (५९)

भावार्थ: श्यामा जी ने उन्हें तुरंत (अग्नि से) पीछे खींचा। (श्यामा जी बोले) हे प्रभु, आपने अपना हाथ क्यों जला लिया? साईं प्रभु तब मधुर वचन बोले, 'श्यामा, मुझे अपने हाथ जल जाने का कोई दुःख नहीं है।

हर्षित हूँ बचाए शिशु प्राना, अन्यथा उसे था जल जाना ।
धोंके भट्ठी एक लुहारिना, यकायक पति उसे सम्बोधिना ।। (६०)

भावार्थ: मुझे प्रसन्नता है कि मैंने एक शिशु के प्राण बचा लिए अन्यथा वह जल कर मर जाता। एक लोहारिन भट्टी धोंक रही थी, तभी उसके पति ने उसे पुकारा।

भूली बैठा शिशु उसके आँचल, दौड़ी पास पति द्रुतिचल ।
तब गिरा शिशु तपेलाचल, डार हस्त बचायो मैंने नवल ।। (६१)

भावार्थ: वह यह भूल गई कि उसके आँचल में शिशु है। अपने पति के पास तुरंत वेग गति से दौड़ी। शिशु (अभाग्य से) भट्टी में गिर गया। मैंने तुरंत (भट्टी में) हाथ डालकर उस शिशु का बचा लिया।

है ऐसा महान साईं चरित्र, सुमिरन सों होए हिय पवित्र ।
यह प्रभु साईं कृपा मन्त्र, मोह माया निर्मूलन अभिमन्त्र ।। (६२)

भावार्थ: ऐसा महान साईं का चरित्र है। जो भी प्राणी उनकी स्तुति करेगा, उसे पवित्रता प्राप्त होगी। उसे प्रभु साईं का कृपा मन्त्र मिलेगा। वह माया और अहंकार से दूर रहेगा।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

कष्ट एवं दुर्भाग्य निवारण

सुमिरे साईं जो भी भक्ता, हों दूर तुरंत उनकी सब चिंता ।
सदैव मंगल दूर अमंगलता, साईं बनें तब उनके रक्षिता ।। (६३)

भावार्थ: जो भक्त साईं का स्मरण करेगा (उनकी स्तुति करेगा), उसकी सभी चिंताएं दूर होंगी। साईं उसके सदैव रक्षक बनकर अमंगलता दूर कर मंगल करेंगे।

साईं स्वयं है वचन उचारा, मरणोपरांत भी करूँ उद्धारा ।
बनेंगी मेरी अस्थि भवतारा, करें सदा भक्त राह उजारा ।। (६४)

भावार्थ: साईं ने स्वयं यह वचन दिया है कि उनके समाधी उपरान्त भी वह भक्तों का उद्धार करते रहेंगे। उनकी अस्थियां (उनके भक्तों) संसार रूपी भव को तारेंगी और उनका सदैव मार्ग प्रदर्शन करेंगी।

थे दामू अन्ना साईं के भक्त, की द्वि-बार हानि से बचत ।
एक बार कपास तिजारत, की दूसरी बार अन्न-विक्रयत ।। (६५)

भावार्थ: दामू अन्ना साईं के एक अत्यंत भक्त थे। उनको साईं ने दो बार हानि से बचाया। एक बार कपास के व्यापार में, और दूसरी बार अन्न खरीदने और बेचने में।

करे निवारण सब दारुण कष्ट, साईं कृपा बने वह उत्कृष्ट ।
चुरायो धन उनको निकृष्ट, थी उसमें नथ-प्रिया अंतर्विष्ट ।। (६६)

भावार्थ: (साईं ने) उनके सभी कष्टों का निवारण कर उन्हें श्रेष्ठ व्यक्ति बनाया। एक बार एक धूर्त ने उनका धन चुरा लिया जिसमें उनकी पत्नी की नथ भी सम्मिलित थी।

रोए चित्र साईं के समक्षा, करें निवेदन प्रभु दें उन्हें भिक्षा ।
हो वापस धन उनकी इच्छा, गहे पग साईं करें अब रक्षा ।। (६७)

भावार्थ: साईं के चित्र के समक्ष वह रोने लगे। वह विनती करने लगे कि प्रभु मुझे (कामना पूर्ण हो ऐसी) भिक्षा दीजिए। मेरा धन मुझे वापस मिले, ऐसी मेरी इच्छा है। साईं के (चित्र में) चरण पकड़ लिए और हरि रक्षा कीजिए (ऐसा बोलने लगे)।

हुआ आश्चर्य जब वह देखति, आ रहा चोर संग ले सम्पति ।
पड़ा पग रहा क्षमा मांगति, लालच सों हुई बुद्धि भ्रष्टति ।। (६८)

भावार्थ: तभी उन्हें अत्यंत अचम्भा हुआ जब उन्होंने देखा कि चोर उनका (चुराया हुआ) धन लेकर आया है। उनके पैर पड़कर उनसे क्षमा याचना करते हुए कह रहा थाकि लालच में उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी।

धन्य धन्य हे मेरे साईं, की कृपा प्रभु गुरुदेव की नाईं ।
हो तुम्हीं मेरे बाप औ माँईं, करो रक्षा सदैव गोसाईं ।। (६९)

भावार्थ: (दामू अन्ना कहने लगे) हे मेरे साईं, आपको बहुत बहुत धन्यवाद। आपने गुरु की भांति कृपा की है। आप ही मेरे माता एवं पिता हैं। इसी प्रकार सदैव मेरी रक्षा करते रहिए।

साईं भक्त रहता था गोवा, चुरायो धन उसका अनुचरवा ।
दुःखमय करत रुदन सदैवा, था वह अति विषाद ग्रस्तवा ।। (७०)

भावार्थ: गोवा में साईं के एक भक्त रहतेथे। उनका उनके एक साथी ने ही धन चुरा लिया। (धन चोरी होने के कारण) वह रुदन करते हुए अत्यंत दुःखी रहते थे।

हुए साईं प्रगट तब अग्र, था रूप फ़कीर पर ज्ञान समग्र ।
बोले सुवचन वह दक्षाग्र, करो अनुसरण यह मेरा कथाग्र ।। (७१)

भावार्थ: तब साईं उनके समक्ष प्रगट हुए। उनका रूप एक ज्ञानी फ़कीर की तरह था। वह ज्ञानी (फ़कीर) उससे बोला, 'जो मैं कहता हूँ, उसका अनुसरण करो।'

लो संकल्प तुम अपने हृदय, मिले न जब तक तुम्हें चौर्य ।
तजो भोज जो हो अति प्रिय, मिले धन हो न वचन असत्य ।। (७२)

भावार्थ: (फ़कीर रूप में साईं बोले) तुम अपने हृदय में एक संकल्प लो कि जब तक तुम्हें चुराया हुआ धन (वापस) नहीं मिल जाता तब तक तुम अपने प्रिय भोजन को त्याग दो। तुम्हें धन (वापस) मिल जाएगा। मेरा वचन असत्य नहीं हो सकता।

जब मिल जाए तुम्हें धन, जाओ शिर्डी करो संत दर्शन ।
करेंगे सब कष्ट दूर अनंत, दूँ मैं आशीष तुम्हें अंतर्मन ।। (७३)

भावार्थ: जब तुम्हें (चुराया हुआ) धन मिल जाए तब तुम शिर्डी जाओ। वहां (तुम्हें) संत के दर्शन होंगे। (उनकी कृपा से) ईश्वर तुम्हारे सभी कष्ट दूर कर देंगे। मैं यह आशीर्वाद तुम्हें हृदय से देता हूँ।

हुआ शीघ्र तब एक कौतुक, आयो निकृष्ट ले सब मुद्रक ।
स्वीकारो स्वामी यह आयक, करो क्षमा हे करुनानायक ।। (७४)

भावार्थ: (फ़कीर के जाने के पश्चात) शीघ्र ही एक आश्चर्य हुआ। चोर सभी धन लेकर उनके पास आया और विनती करने लगा, 'हे स्वामी, अपना यह धन स्वीकार कीजिए। हे करुणामूर्ति, मुझे क्षमा कीजिए।

करें स्मरण शब्द फ़कीर के, तब हुए अश्रुमय नैन भक्त के ।
किए दर्शन जा प्रभु साईं के, हुए तब तृप्त नैन प्रेमी के ।। (७५)

भावार्थ: फ़कीर के शब्दों को स्मरण कर, तब भक्त के नैनों में जल भर आया। (उसके पश्चात्) उन्होंने शिर्डी जाकर साईं के दर्शन किए और अपने नैनों को तृप्त किया।

है कथा एक अन्य शिष्य की, साईं भक्त श्री साठे जी की ।
कष्टों से अति अधोमुखी की, कारण हुई हानि धंधे की ।। (७६)

भावार्थ: साईं के अन्य भक्त श्री साठे जी की कथा सुनो। वह व्यापार में हानि के कारण अत्यंत कष्टों से दुःखी थे।

थे कोतवाल रहे ढूंढ उद्यमा, चल रहे आपराधिक मुकदमा ।
तब वह साईं शरण अनुगमा, आए शिर्डी श्री साठे बुद्धिमा ।। (७७)

भावार्थ: उन पर आपराधिक मुकदमे चल रहे थे, जिस कारण पुलिस उनको ढूंढ रही थी। तब वह बुद्धिमान पुरुष श्री साठे जी साईं की शरण शिर्डी में आए।

गहे पग त्राहि त्राहि पुकारा, तब प्रभु साईं दुःख निवारा ।
आरक्षी सब प्रयास कर हारा, जब साईं का मिला सहारा ।। (७८)

भावार्थ: (शिर्डी आकर साठे जी ने) हे साईं मेरी रक्षा करो, रक्षा करो, पुकारा। तब हरि कृपा से उनके सभी दुःख नष्ट हुए। पुलिस बहुत प्रयास कर हार गई (उनका कुछ ना बिगाड़ सकी)। उन्हें साईं का सहारा मिला हुआ था।

गुरु साईं का वह अनुग्रह पाए, तब व्यापार में नाम कमाए ।
मुकदमा सभी समाप्त कराए, धन-धान्य वह फिर से पाए ।। (७९)

भावार्थ: साईं का उन्हें आशीष मिला और (फिर से) उन्होंने व्यापार में नाम कमाया (सफलता प्राप्त की। (उनके विरुद्ध) सभी मुकदमे समाप्त हो गए। फिर से उन्हें धन-धान्य की प्राप्ति हुई।

साईं तब गुरु चरित्र पढ़ावा, यश धन पद वह फिर से पावा ।
भव बंधन से मुक्त करावा, चिंता मुक्त मन शान्ति पावा ।। (८०)

भावार्थ: साईं ने उन्हें गुरु चरित्र का पाठ करवाया। (इसके पठन से) उन्हें यश, धन एवं पद की प्राप्ति हुई। भव बंधन से मुक्त होकर उनका हृदय चिंता मुक्त हो गया और शान्ति को प्राप्त हुआ।

थे अमरावती के एक सेनानी, खापर्डे जी थे सब जग जानी ।
स्वाधीनता के वह अगवानी, करते अनुसरण गाँधी वानी ।। (८१)

भावार्थ: अमरावती के एक सेनानी खापर्डे जी थे, जो गाँधी जी के अनुयायी एवं स्वतन्त्रता सेनानी थे।

अंग्रेज़ों के वह थे अपराधी, बगावत के आरोप आराधी ।
थे देशभक्त वह निरपराधी, आए शिर्डी साईं शरणाधी ।। (८२)

भावार्थ: अंग्रेज़ों के वह अपराधी थे। (उन्होंने) उन पर देश द्रोह का आरोप लगा रखा था। लेकिन वह देशभक्त एवं निरपराधी थे। शरणार्थी बन कर शिर्डी में वह आए।

साईं ने उन्हें अभय किया, शिर्डी में उचित निवास दिया ।
साई शरण ने उत्साह दिया, अबाध सभी कष्टों से किया ।। (८३)

भावार्थ: साईं ने उन्हें अभयदान दिया तथा शिर्डी में ही उनके निवास की व्यवस्था की। प्रभु के वरदान स्वरुप हस्त से उनका उत्साह बढ़ा एवं उनके सभी कष्ट दूर हो गए।

थे अस्वस्थ भक्त श्री तात्या, थी घोर कष्ट में उनकी काया ।
त्याग स्व-प्राण उन्हें बचाया, माँ तात्या का ऋण था चुकाया ।। (८४)

भावार्थ: जब तात्या अस्वस्थ थे, उनकी काया घोर कष्ट में थी, तब तात्या जी की माता का ऋण चुकाने हेतु अपने (साईं ने) प्राण त्याग कर (उन्होंने) तात्या जी के प्राण बचाए।

सन अठारह सौ अस्सी शक, थी दशा तात्या चिंताजनक ।
लगा समय था मृत्यु सूचक, तब हुई घटित घटना अचानक ।। (८५)

भावार्थ: अठारह सौ अस्सी शक काल था। तात्या की स्तिथि चिंताजनक थी। (ऐसा लग रहा था) उनका मृत्यु का समय आ गया था। तभी अचानक एक घटना घटित हुई।

जीवित हुए भक्त श्री तात्या, त्यागे प्राण श्री साईं आराध्या ।
धन्य धन्य हे साईं पूज्या, हम भक्त सदैव तुम्हरे आश्रया ।। (८६)

भावार्थ: श्री तात्या तो जीवित हो गए, लेकिन पूजित साईं ने अपने प्राण त्याग दिए। हे प्रभु (साईं) आप धन्य हैं। हम सदैव आपके आश्रित हैं।

हुआ श्यामा जब सर्प दंशा, माई द्वारका पहुंचे लिए मंशा ।
हो रहा था विष निरंकुशा, हे साईं करो दूर यह क्लेशा ।। (८७)

भावार्थ: श्री (एक बार) श्यामा जी को सर्प ने काट लिया। विष का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था। वह तत्काल साईं निवास द्वारकामाई इस आशा से पहुंचे कि साईं उनके कष्ट का निवारण करें (विष उतार दें)।

दिए साईं तब विष आदेशा, बम्मन उतर न चढ़ अग्रेषा ।
जा जा दूर हे रिपु विशेषा, हुए विषहीन तब पूर्ण मनीषा ।। (८८)

भावार्थ: तब साईं ने विष को आदेश दिया, 'हे बम्मन (सर्प को बम्मन भी कहा जाता है), उतर, आगे न बढ़। हे विशेष शत्रु, तुरंत दूर जा।' (साईं के इस आदेश से) श्यामा जी पूर्णतः विषहीन हो गए।

मैनाताई जी के प्राण बचाए, प्रसव पीड़ा उपचार कराए ।
श्री रामगीर बूवा बुलवाए, शीघ्र उदी जामनेर भिजवाए ।। (८९)

भावार्थ: (श्रीमती) मैनाताई के प्राणों की रक्षा की। प्रसव पीड़ा में जब उनकी स्तिथि चिंताजनक हो रही थी, तब रामगीर बूवा जी के हाथों तुरंत उदी जामनेर पहुंचवाई।

जामनेर को गमन कीजिए, दी आज्ञा अब देर न कीजिए ।
विनती साईं बूवा जी करिए, प्रभु धारें हम बस दो रुपिए ।। (९०)

भावार्थ: साईं ने तब (रामगीर बूवा जी को) आज्ञा दी, 'आप शीघ्र ही जामनेर को प्रस्थान कीजिए।' तब रामगीर बुवा जी ने (साईं से) विनती की, ' हे प्रभु, मेरे पास तो केवल दो रुपये हैं।'

अप्रयाप्त धन हेतु किराया, अधिकतम जलगांव पहुंचाया ।
जामनेर जलगांव अंतराया, है तीस मील दूर मेरे भाया ।। (९१)

भावार्थ: (रामगीर बुवा जी बोले) 'मेरे पास (जामनेर जाने के लिए) प्रयाप्त रेल किराया नहीं है। मैं (दो रुपियों से) संभवतः जलगांव तो पहुँच सकता हूँ। लेकिन हे प्रभु, जलगांव से जामनेर तीस मील की दूरी पर है। '

साईं हो कैसे संभव पहुँचना, ना जब धन पर्याप्त अधीना ।
तब बोले साईं मधुर वचना, हम सब हैं ईश्वर आधीना ।। (९२)

भावार्थ: (रामगीर बुवा जी बोले) जब पास पर्याप्त धन नहीं है तो मेरा वहां पहुँचना कैसे संभव हो सकता है? तब साईं यह वचन बोले, '(हे रामगीर) हम सब ईश्वर के आधीन हैं।'

निःसंदेह देंगे हरि पर्याप्ता, करो यात्रा नाम ले पोषिता ।
बुवा चले तब साईं सुमिरता, जलगांव मंडल वह पहुंचता ।। (९३)

भावार्थ: (साईं बोले) (हे रामगीर) प्रभु का नाम लेकर जाओ। वह ही निःसंदेह प्रयाप्त साधन देंगे।' तब साईं को स्मरण करते हुए (रामगीर बूवा जी) चल दिए, और (रेलगाड़ी से) जलगांव रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए।

सुना स्वर तब एक तांगेवा, कौन आया शिर्डी से बुवा ।
है जामनेर गमन पथिकवा, बोले रामगीर हम ही हैं बुवा ।। (९४)

भावार्थ: तब उन्होंने (रामगीर बूवा ने) एक तांगे वाले का स्वर सुना, 'कौन रामगीर बूवा है, जो जामनेर का यात्री है?' (तब रामगीर बूवा जी बोले) हाँ भाई, हम हैं रामगीर बूवा।

अचंभित तब रामगीर हुए, अवश्य चमत्कार श्री साईं किए ।
तब बैठ तांग वह चल दिए, बीच मार्ग त्वरित पहुँच गए ।। (९५)

भावार्थ: रामगीर बुवा यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए। (अवश्य ही) यह चमत्कार साईं ने किया है। तब वह तांगे में बैठकर (जामनेर को) चल दिए। शीघ्र ही मध्य मार्ग में (वह) पहुँच गए।

तांगा तब रोका कोचवान, किया भेंट बुवा वह जलपान ।
कोचवान लगता मुसलमान, देख वेश यह सोचें भद्रवान ।। (९६)

भावार्थ: तब (मध्य मार्ग में) कोचवान ने तांगा रोका और उन्हें (रामगीर बूवा जी को) जल पान भेंट किया। (रामगीर बूवा जी कोचवान की) वेशभूषा देखकर अनुमान लगाए कि यह तो मुसलमान लगता है।

समझी अन्तर्दशा तब चालक, बोला हूँ मैं क्षत्रिय हे नायक ।
स्वीकारो भोजन बेझिझक, बोला वह वचन यह रोचक ।। (९७)

भावार्थ: उनकी (रामगीर बूवा जी की) अन्तर्दशा कोचवान ने समझ ली। तब वह मधुर वचन बोला, 'हे श्रेष्ठ पुरुष, मैं (जाति से) क्षत्रिय हूँ। आप निःसंकोच यह भोज स्वीकार करें।'

बुवा तब जलपान किए, फिर जामनेर को प्रस्थान किए ।
अति तीव्र गति अश्व चल दिए, अविलम्ब गंतव्य पहुँच गए ।। (९८)

भावार्थ: (रामगीर) बूवा ने तब जलपान किया। तद्पश्चात जामनेर के लिए प्रस्थान किया। (तांगे में जुते) अश्व तीव्र गति से दौड़ने लगे। शीघ्र ही वह गंतव्य स्थान (जामनेर) पहुँच गए।

गए लघुशंका पहुँच जामनेरा, लौटे तब न देखें कोई वीरा ।
ना था तांगा ना हाँकीरा, भए विस्मित वह भद्र शरीरा ।। (९९)

भावार्थ: गंतव्य स्थान पर पहुंचने के बाद रामगीर जी लघुशंका हेतु गए। जब वह लौट कर आए तो उन्हें वहां कोई दिखाई नहीं दिया। न तो तांगा ही था और न कोचवान। यह (लीला) देखकर भद्र पुरुष अत्यंत चकित हुए।

गृह वह तब गए नाना जी, दी साईं विभूति मैनाताई जी ।
भईं स्वस्थ्य तुरंत बाई जी, किए ऐसी कृपा प्रभु साईं जी ।। (१००)

भावार्थ: तब वह नाना जी के गृह गए। (जाते ही) उन्होंने मैनाताई जी को विभूति दी। बाईजी (मैनाताई विभूति पाकर) तुरंत स्वस्थ हो गईं। (सभी ने) भगवान् साईं बाबा का (तब) आभार प्रगट किया।

जो प्राणी गाएं यह चरिता, दें साईं उन्हें अत्यंत प्रसन्नता ।
हैं हम सदैव साईं आश्रिता, दो प्रभु हमें दिव्य अमनता ।। (१०१)

भावार्थ: जो भी प्राणी इस चरित्र का गान करेंगे, साईं उन्हें सभी प्रकार का आनंद देंगे। हम सब तो साईं के आश्रित हैं। उनसे सदैव शान्ति देने की प्रार्थना करते हैं।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

संतति प्रदान

पलटे भाग्य निःसन्तानों के, बने पिता आशीष श्री साईं के ।
दामू अन्ना भक्त साईं के, थे संतान-हीन कारण कर्म के ।। (१०२)

भावार्थ: साईं के आशीर्वाद से निःसन्तानों के भाग्य पलट गए और वह पिता बन गए। साईं के भक्त दामू अन्ना अपने कर्म (फल) के कारण संतान विहीन थे।

साईं कीन्हीं आम्र-लीला, पाए संतान चार वह समीला ।
है साईं का जग बोलबाला, प्रभु बिन है कौन रखवाला ।। (१०३)

भावार्थ: साईं ने आम्र-लीला के द्वारा उन्हें चार शांतिप्रिय संतानें दीं। हे साईं, आप संसार पूजित हैं। आपके अतिरिक्त हमारी रक्षा करने वाला कोई और नहीं है।

नांदेद के थे रतन वालिया, थी सोच सरल उच्च पूर्ण दया ।
थे दास गनु उनके सुहृदया, आए नांदेद मिलने प्रिया ।। (१०४)

भावार्थ: नांदेद के श्री रतन वालिया जी अति सुगम, उच्च विचार के दयावान पुरुष थे। दास गणु जी उनके प्रिय मित्र थे। (एक बार दास गणु जी) अपने प्रिय मित्र से मिलने नांदेद आए।

थे उदास ना कोई संतति, कैसे पाऊँ गनु संत मैं वंशति ।
तब दास गनु दी उन्हें सम्मति, जाओ श्री साईं शरणागति ।। (१०५)

भावार्थ: वह (श्री रतन वालिया) उदास थे क्योंकि उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने संत (दास गणु) से पूछा कि उन्हें संतति किस प्रकार मिल सकती है? दास गणु जी ने तब उन्हें प्रभु साईं की शरण में जाने का परामर्श दिया।

आए शिर्डी की प्रार्थना, हे श्री साईं जग-पालक भगवाना ।
करो अब दूर मेरा अकुलाना, पाऊँ प्रताप तुम्हरे संताना ।। (१०६)

भावार्थ: तब वह (रतन वालिया जी) शिर्डी आए और उन्होंने साईं की प्रार्थना की, 'हे साईं, आप तो संसार का पालन करने वाले (स्वयं) भगवान् हैं। मेरी अकुलाहट (चिंता) को भी दूर कीजिए। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं संतान प्राप्त कर सकूं।

सुनी पावन हिय की विनती, वरद हस्त दी साईं आश्वस्ती ।
हैं ईश्वर निर्मल दया की मूर्ती, सदैव करें सब इच्छा-पूर्ती ।। (१०७)

भावार्थ: पवित्र ह्रदय की विनती सुनकर साईं ने अपना कृपा हस्त उनके ऊपर रख उन्हें आश्वस्त किया (और बोले), 'ईश्वर तो निर्मल प्रतिरूप हैं। वह तो सदैव सब की इच्छा पूर्ती करते हैं।'

लो उदी अब हो निर्भीका, बनो पिता शीघ्र चार बालिका ।
हुआ तस उपकार प्रभु का, साईं करें निर्मूल दुर्भाग्य का ।। (१०८)

भावार्थ: (साईं बोले) अब उदी ग्रहण करो, और निडर हो जाओ। शीघ्र ही तुम चार पुत्रियों के पिता बनोगे।' इस प्रकार उन पर प्रभु का उपकार हुआ। उनके समस्त दुर्भाग्यों का साईं ने पूर्ण रूप से नाश कर दिया।

थे भक्त साठे हरी विनायक, पद राय बहादुर सम्मानक ।
निःसंदेह वह थे अधिनायक, अभाग्य से थे निःसन्तानक ।। (१०९)

भावार्थ: (साईं) भक्त हरी विनायक साठे जी राय बहादुर पद से सम्मानित थे। वह निःसंदेह एक बड़े नेता थे। परन्तु अभाग्य से निःसंतान थे।

पा कर आशीष प्रभु साईं, हुआ उदित भाग्य संतानें पाईं ।
हैं ऐसे महान मेरे गोसाईं, करें कृपा गुरुदेव की नाईं ।। (११०)

भावार्थ: प्रभु साईं के आशीर्वाद से उन्हें संतानों की प्राप्ति हुई। मेरे मालिक साईं अत्यंत महान हैं। वह सदैव गुरु की तरह कृपा करते रहते हैं।

थे सोलापुर के सखाराम, तरसे हिय दें पुत्र भगवान ।
स्तुति करें सभी सतनाम, गए तीर्थ सब पावन धाम ।। (१११)

भावार्थ: सोलापुर के सखाराम जी पुत्र के लिए हृदय में तड़पते रहते थे। उन्होंने सभी पवित्र तीर्थों में जाकर सभी देवताओं की स्तुति की।

सखी दियो पत्नी सुझाव, लो शरन चरन संतन के राव ।
हैं साईं अति कृपालु स्वभाव, समझो उन्हें कामधेनु गाव ।। (११२)

भावार्थ: उनकी पत्नी की एक सहेली ने उन्हें सुझाव दिया कि संतों में श्रेष्ठ संत (साईं) के चरणों की शरण लो। साईं अत्यंत कृपालु स्वभाव के कामधेनु (इच्छाओं की पूर्ती करने वाले गौ माता) गाय की भांति हैं।

तब पति-पत्नी शिर्डी आए, श्यामा मिल तब व्यथा सुनाए ।
श्यामा समीप साईं तब गए, दें पुत्र उन्हें अनुरोध किए ।। (११३)

भावार्थ: तब पति-पत्नी शिर्डी आए। (साईं बाबा के अनन्य भक्त) श्यामा जी से मिलकर उन्हें अपनी व्यथा सुनाई। श्यामा जी ने तब साईं से उन्हें पुत्र (का वरदान) देने का अनुरोध किया।

साईं बोले वर्ष एक अन्तराला, बने माँ इच्छा रखवाला ।
गए गृह पति-पत्नी आला, पाए पुत्र जस प्रभु कह डाला ।। (११४)

भावार्थ: (श्यामा जी की प्रार्थना पर प्रसन्न हो) साईं बोले, 'एक वर्ष की प्रतीक्षा करो। प्रभु इच्छा से यह अवश्य ही माँ बनेंगी।' तब वह दम्पति अपने घर चले गए। जैसा साईं ने कहा था, उसी प्रकार उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई।

आए शिर्डी तब नवजात संग, डारो श्री साईं चरन सुमंग ।
प्रफुल्लित उनका अंग अंग, हैं प्रभु अवतार साईं सर्वांग ।। (११५)

भावार्थ: नवजात शिशु को लेकर तब वह (साईं के आशीर्वाद हेतु) शिर्डी आए। उन्होंने अपने प्रिय पुत्र को साईं चरणों में डाल दिया। उनका अंग अंग प्रफुल्लित हो रहा था। (वह वन्दना कर रहे थे) साईं प्रभु के पूर्ण अवतार हैं।

थे पुत्र एकल सपतनेकर, हुआ दुर्भाग्य अकालान्त प्रियकर ।
मांगे क्षमा शिर्डी आकर, आलोचन अविश्वास साईं पर ।। (११६)

भावार्थ: सपटणेकर जी (साईं पर अविश्वास रखने वाले एक व्यक्ति) के इकलौते पुत्र की दुर्भाग्य से अकाल मृत्यु हो गई। उन्होंने साईं के प्रति अविश्वास पर शिर्डी आकर क्षमा याचना की।

श्री साईं तो हैं दया की मूर्ति, करें अपराध क्षमा सब व्यक्ति ।
रख शीश कर साईं वदति, दूँ वर भार्या हो फिर से गर्भति ।। (११७)

भावार्थ: साईं तो दया की मूर्ति हैं। वह तो सभी के अपराध क्षमा कर देते हैं। उन्होंने (साईं ने) अपना वर-हस्त उनके (सपटणेकर जी) शीश पर रखा और बोले, 'मैं वरदान देता हूँ कि तुम्हारी पत्नी फिर से गर्भवती हो।'

लिया पुनर्जन्म वह मृत पुत्र, हुआ प्रवेश तत्व गर्भ अत्र ।
हुए वह पिता तीन पुत्र, साईं धन्य धन्य तुम हो सर्वत्र ।। (११८)

भावार्थ: उसी मृत पुत्र की आत्मा ने गर्भ में प्रवेश कर पुनर्जन्म लिया। (बाद में) वह (सपटणेकर जी) तीन पुत्रों के पिता बने। हे साईं, धन्य धन्य, आप सर्वत्र उपस्थित हैं।

हुए पुत्र तीन सपतनेकर, भास्कर मुरलीधर और दिनकर ।
श्री साईं हैं महान लीलाकर, पाएं शांति उनके गुण गाकर ।। (११९)

भावार्थ: उनके (सपटणेकर जी) तीन पुत्र हुए, भास्कर, मुरलीधर एवं दिनकर। साईं की लीलाएं महान हैं। हम साईं का गुणगान कर शान्ति पाएं।

प्रणाम साईं समेत परिवार, हो तुम हमरे जीवन आधार ।
आए शरण हमें दो निष्कार, हो हृदय शांत हे अमृतधार ।। (१२०)

भावार्थ: (हे साईं) हम परिवार सहित आपको प्रणाम करते हैं। आप हमारे जीवन के आधार हैं। हम आपकी शरण आए हैं। हमें मुक्ति दीजिए। हे अमृतधार (अमृत की वर्षा करने वाले प्रभु) हमारे हृदय को शान्ति दीजिए।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

फलश्रुति (पठन/ श्रवण साईं महात्मय)

हे श्री साईं तुम प्रभु अग्रजा, हे सच्चिदानंद करें हम पूजा ।
तुम हो हरि जो करें सृजा, हम दीन दुःखी तुम्हरी प्रजा ।। (१२१)

भावार्थ: हे प्रभु साईं आप ही हमारे अग्रज हैं। हे सच्चिदानन्द, हम आपकी स्तुति करते हैं। आप ही इस विश्व के सृजन करता हैं। हम आपकी दीन दुःखी प्रजा हैं।

तुम ही हो जग के आधारा, साईं हमरे एकमात्र सहारा ।
कामधेनु सम दें उपहारा, इच्छा पूर्ण कर दें सुख सारा ।। (१२२)

भावार्थ: (हे साईं) तुम ही इस विश्व के आधार हो। हमारे एकमात्र सहारा हो। कामधेनु (गाय) समान उपहार देने वाले हो। इच्छा पूर्ण कर समस्त सुख देने वाले हो।

साईं हैं मुनि अगस्त्य रूपा, तारें भवसिंधु करें जब कृपा ।
निंदा घृणा ईर्ष्या व् पापा, दें अति दुःख चहुँ ओर व्यापा ।। (१२३)

भावार्थ: साईं तो महर्षि अगस्त्य समान हैं जो कृपा करने पर इस भवसागर से तार देते हैं। चारों ओर व्याप्त निंदा, घृणा, ईर्ष्या एवं पाप अत्यंत दुःख दे रहे हैं।

पड़ें चरण हम करें प्रार्थना, दयालु श्री साईं करें कल्याना ।
करो दूर मन की वासना, हों अति श्रेष्ठ हमारी भावना ।। (१२४)

भावार्थ: (साईं के) चरणों पर पड़कर हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि हे दयालु साईं, आप हमारा कल्याण करें। हमारे मन की वासना को दूर कर श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश करें।

हर घर में हो साईं-सच्चरित्र, साईं महात्मय कथा पवित्र ।
पढ़े सुने जो यह चरित्र, रिपु भी बनें उनके सुमित्र ।। (१२५)

भावार्थ: हर घर में पावन साईं सच्चरित्र एवं साईं महात्मय कथा हो (पढ़ी जाए)। इनके (साईं के) चरित्र को पढ़ने सुनने से घोर शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

हों कष्ट दूर पाएं धन-धन्य, न वांछित पूजें कोई अन्य ।
इहलोक हों सुखी परिजन्य, परलोक पाएं धाम हरि पुन्य ।। (१२६)

भावार्थ: (जो साईं सच्चरित्र अथवा साईं महात्मय का पठन/ श्रवण करेंगे) उनके सभी कष्ट दूर होंगे और धन-धान्य की प्राप्ति करेंगे। (साईं ने स्वयं ऐसा कहा है) किसी और देवता की स्तुति की आवश्यकता नहीं। इहलोक (पृथ्वी लोक) में सभी सम्बन्धी सुख की प्राप्ति करेंगे, और परलोक (मरणोपरांत) में प्रभु का धाम पाएंगे।

है साईं स्वयं सुमुख उच्चारा, करे मेरी कथा जग उद्धारा ।
पढ़े सुने लीला अपारा, सुख इहलोक मोक्ष जब पारा ।। (१२७)

भावार्थ: साईं ने अपने पवित्र मुख से स्वयं ही कहा है कि मेरी कथा जग का उद्धार करने वाली है। जो भी उनकी लीला को पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसे इहलोक में सुख और मरण पर मोक्ष की प्राप्ति होगी।

पाए परमानंद वह हृदय, ज्ञान आत्मबोध पाए ईश्वर्य ।
हों नष्ट वासना पाए ऐश्वर्य, हृदय श्रद्धा ज्ञान और धैर्य ।। (१२८)

भावार्थ: (जो भी साईं की लीलाओं का पठन/ श्रवण करेगा) हृदय में उसके परम आनंद की अनुभूति होगी। उसे आत्म-ज्ञान एवं ईश्वर की प्राप्ति होगी। वासनाएं नष्ट होंगी और वह दिव्यता को प्राप्त करेगा। उसके हृदय में ज्ञान, श्रद्धा, और धैर्य (सबूरी) की वृद्धि होगी।

साईं साईं द्विशब्द उच्चारें, संकटमोचन हरि नाम पुकारें ।
पा निरोगी तन व्याधि हारें, कटें पाप कई जन्म सुधारें ।। (१२९)

भावार्थ: जो भी 'साईं साईं' इन दो संकटमोचन शब्दों का उच्चारण करेंगे, उनकी काया से सभी रोग दूर होंगे। वह निरोग होकर अपने जन्म-जन्मांतर के पापों का विनाश करेंगे।

है साईं दियो वचन सच्चरित्र, आवे शरण सो होए पवित्र ।
करें रक्षा बन सत्य मित्र, हो सुगन्धित सर्वत्र सम इत्र ।। (१३०)

भावार्थ: साईं ने (साईं) सच्चरित्र में यह वचन दिया है कि जो भी उनकी शरण आएगा, वह उसको पवित्र कर देंगे। सत्य-मित्र की भाँती उसकी रक्षा करेंगे। उसकी सुगन्धि (यश) पूर्ण विश्व में इत्र की तरह फैलेगी।

है साईं का यह वैशिष्ट्य, हो उनका भक्त सदैव अतुल्य ।
बने प्रभु प्रिय विनर्दिष्ट्य, करें कुशल सदैव हृदयेष्ट्य ।। (१३१)

भावार्थ: यह साईं की विशेषता है कि वह अपने भक्त को अतुल्य बना देते हैं। वह (भक्त) प्रभु का अति विशेष प्रिय बन जाता है। (साईं) अपने भक्त की सदैव हृदय से मंगल कामना करते रहते हैं।

नहीं वांछित योग अभ्यासा, न्याय दर्शन और मीमांसा ।
मन्त्र पंचाग्नि तप व् उपासा, अष्टांग योग ध्यान उपवासा ।। (१३२)

भावार्थ: साईं की स्तुति के लिए किसी भी प्रकार के योग अभ्यास, न्याय दर्शन, मीमांसा इत्यादि का ज्ञान, पांच अग्नि यज्ञ, तपस्या, अष्टांग योग साधना अथवा उपवास की कोई आवश्यकता नहीं है।

जस कर नाविक पर विश्वासा, नदी पार पहुंचे पथिकसा ।
कर तस साईं पर विश्वासा, तरे जीव भव अम्बुधिसा ।। (१३३)

भावार्थ: जिस प्रकार नाविक पर विश्वास करते हुए यात्री नदी पार करता है, उसी प्रकार साईं पर विश्वास कर प्राणी भाव सागर से तर जाता है।

करें स्मरण लीला श्री साईं, करें अर्चना गुरुदेव की नाईं ।
पाएं सुख अमन जगताईं, तजे सहज तन जब मरणाईं ।। (१३४)

भावार्थ: साईं की लीला का स्मरण करें और उन्हें प्रभु की तरह पूजें। इस प्रकार संसार में सुख और शान्ति प्राप्त करें तथा सहज शरीर त्याग स्वर्गलोक पधारें।

मनोवांछित फल वह पाए, हिय में जब महात्मय समाए ।
प्रातः साईं सुमर उठ जाए, पवित्र जल में तब वह नहाए ।। (१३५)

भावार्थ: जब हृदय में (साईं) महात्मय समा जाए, तब मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। प्रातः उठते ही साईं का स्मरण करे और पवित्र जल में स्नान करे।

रख साईं चित्र अग्र वह पूजे, पढ़े महात्मय संग समुजे ।
विनती प्रभु आशीष हमें दीजे, जन्म-मरन से मुक्ति दीजे ।। (१३६)

भावार्थ: साईं चित्र को अपने समक्ष रखकर समाज के साथ (साईं) महात्मय का पाठ करें। प्रभु से आशीष मांगें कि वह जन्म-मरण से मुक्ति दें।

जस कर पाए सागर मंथन, सुर असुर सुधा सम रत्न ।
तस जो करे काव्य मनन, पाए वह दिव्य सुख चमन ।। (१३७)

भावार्थ: जिस प्रकार समुद्र-मंथन से देव एवं असुरों ने अमृत जैसे रत्नों की प्राप्ति की थी, उसी प्रकार इस काव्य के मनन से दिव्य सुख और शांति प्राप्त होगी।

जस जब मिले नदी सिंधुनी, पाए बड्डपन छुद्र प्रवाहिनी ।
तस पठन श्रवन यह ग्रंथनी, हो नर नारि ऐश्वर्य वृद्धिनी ।। (१३८)

भावार्थ: जिस प्रकार नदी समुद्र से मिलन पर छोटी होने पर भी बड्डपन को प्राप्त होती है, उसी प्रकार इस ग्रन्थ के पठन/ श्रवण से हर नर नारी के ऐश्वर्य में वृद्धि होती है।

धन धान्य पाएं निर्धनी, पाएं स्वास्थ्य लाभ सब रोगिणी ।
बनें जनयितृ जो हों निःसंतनी, हों संपन्न दुःखी व्यथनी ।। (१३९)

भावार्थ: (इस काव्य ग्रन्थ के पढ़ने/ सुनने से) निर्धनों को धन की प्राप्ति होती है। रोगीओं को स्वास्थ्य लाभ होता है। निःसंतान माता-पिता बनते हैं, और दुःखी व्यथी लोगों को सम्पनता मिलती है।

करें नमन पग हम साईं, बसो हमरे हृदय हे गोसाईं ।
त्राहि त्राहि पुकारें हरि साईं, करो कृपा गुरुदेव की नाईं ।। (१४०)

भावार्थ: साईं, हम आपके चरणों को नमन करते हैं। हे संत (गोसाईं), हमारे हृदय में वास कीजिए। हे प्रभु साईं हमारी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। गुरु की भांति हम पर कृपा कीजिए।

एवमस्तु।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

शिर्डी साईं बाबा - संक्षिप्त जीवन परिचय

ऐसा माना जाता है कि महाराष्ट्र के पाथरी (पातरी) गांव में साईं बाबा का जन्म २७ सितंबर १८३० को हुआ था। साईं के जन्म स्थान पाथरी (पातरी) पर एक मंदिर भी बना हुआ है जो इसका प्रमाण स्वरुप है।

श्री शशिकांत शांताराम गडकरी की पुस्तक '**सद्गुरु साईं दर्शन - एक बैरागी की स्मरण गाथा**' के अनुसार साईं के पिता का नाम श्री गोविंद भाऊ और माता का नाम श्रीमती देवकी अम्मा बताया गया है, जो पाथरी के निवासी थे। पुस्तक में ऐसा विवरण है कि उनके पिता कश्यप गोत्र के यजुर्वेदी ब्राह्मण थे।

साईं का परिवार ब्राह्मण अवश्य था, परन्तु उनके पिता कर्म-काण्ड में निपुण ब्राह्मण नहीं थे। कर्म-काण्ड में निपुण न होने के कारण वह पुरोहिती नहीं कर पाते थे अतः अपना जीवन-यापन श्रमक-कार्य से ही करते थे। साईं के चार भाई और भी थे। बड़ा ही निर्धन परिवार था। साईं के माता पिता जैसे तैसे श्रमक-कार्य करके अपना और अपने पांचों बच्चों का पेट पाल रहे थे। साईं के पिता का गांव हैदराबाद निज़ाम के साम्राज्य का एक भाग था। निज़ाम के साम्राज्य में मुस्लिमों का एक हथियारबंद संगठन था जिसे रज़ाकार कहा जाता था। यह रज़ाकार हिन्दूओं को बहुत कष्ट देते थे। उनके अत्याचार जब असहनीय हो गए तो कई हिन्दूओं के साथ साईं के माता पिता ने भी वह गांव छोड़ने का निश्चय किया। वह पंढरपुर आ गए। एक बार जीविका के लिए शहर को जाने हेतु जब उनका परिवार पंढरपुर के समीप बहती भीमा नदी को नाव से पार कर रहा था तो दुर्भाग्य से नाव पलट गई। कई यात्रीओं के साथ साईं के पिता भी भीमा नदी के आगोश में समा गए। उसी समय नदी किनारे खड़े कई लोगों ने इन डूबते हुए यात्रीओं को बचाने का प्रयास किया, जिसमे एक सूफी संत वली फ़क़ीर भी थे। साईं की माता और उनके कुछ पुत्र डूबने से तो अवश्य बच गए पर अत्यंत निर्धन होने के कारण साईं की माता अपने बच्चों का पेट पालने में असमर्थ थीं। अतः फ़क़ीर वली के आग्रह पर उन्होंने अपने एक बच्चे को उन्हें सौंप दिया। उस समय साईं की आयु केवल ८ वर्ष की थी। सूफी संत फ़क़ीर वली तब उन्हें लेकर ख़्वाजा शमशुद्दीन गाज़ी की दरगाह पर इस्लामाबाद (अब पकिस्तान का एक भाग) आ गए। फ़क़ीर

वली की वहां आकस्मिक मृत्यु हो गई। तब इस बच्चे को ख़्वाजा शमशुद्दीन गाज़ी की दरगाह में ही रह रहे एक अन्य सूफी संत फ़क़ीर रोशन शाह ने पालने का उत्तरदायित्व लिया। फ़क़ीर रोशन शाह बच्चे को लेकट तदुपरांत अजमेर आ गए। अजमेर में इस बच्चे ने सूफी मत से प्रभावित इस्लाम धर्म का अध्ययन किया। इसके साथ साथ ही ख़्वाजा चिश्ती की दरगाह में रहने वाले एक हक़ीम साहेब से औषधियों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ क़ुरान को भी इस बच्चे ने यहीं मुखाग्र कर लिया। कुछ समय बाद फ़क़ीर रोशन शाह इस बच्चे के साथ इलाहाबाद आए जहां दुर्भाग्य से हृदयाघात से उनका भी निधन हो गया। फ़क़ीर रोशन शाह की मृत्यु के बाद फिर से यह बच्चा अनाथ हो गया। यह बच्चा तब गंगा नदी किनारे अनाथ की तरह भिक्षा मांगकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। उसी समय इलाहबाद में एक संतों का सम्मेलन हुआ जिसमें नाथ सम्प्रदाय के संत भी सम्मिलित हुए थे। इस बच्चे का झुकाव नाथ संप्रदाय और उनकी शिक्षाओं की ओर हुआ। यह बच्चा तब नाथ संप्रदाय के प्रमुख से मिला। उनके साथ संत समागम और सत्संग किया। संत सम्मलेन की समाप्ति पर नाथ सम्प्रदाय के संतों ने अयोध्या की यात्रा की। यह बच्चा भी उनके साथ अयोध्या आ गया। यहां नाथ पंथ के प्रमुख ने इस बच्चे को नाथ सम्प्रदाय के शिष्य की पहचान के रूप में एक चिमटा (सटाका) भेंट किया। नाथ संत प्रमुख ने उनके कपाल पर चंदन का तिलक भी लगाया और कहा कि वह हर समय इसका धारण करके रखें। इस बच्चे ने जीवनपर्यंत तिलक धारण तो अवश्य किया, परन्तु चिमटा (सटाका) एक अपने अत्यंत प्रेमी और शिष्य हाज़ी बाबा को भेंट कर दिया। अयोध्या यात्रा के बाद नाथपंथी अपने डेरे पर चले गए। यह बच्चा फिर एक बार अकेले रह गया।

बच्चे को अपने जन्म स्थान पाथरी का कुछ कुछ स्मरण था, अतः वह पाथरी के लिए चल दिया । वह इस आशा में था कि उसकी माता अथवा परिवार का कोई सदस्य तो वहां अवश्य ही मिल जाएगा। पाथरी पहुंचने पर इस बच्चे को पता चला कि वहां उसके परिवार का अब कोई सदस्य नहीं रहता। उनके बारे में भी किसी को कुछ पता नहीं है। इस बच्चे के परिवार के घर के पास एक चाँद मियाँ का घर था। उनकी पत्नी चाँद बीबी इस बच्चे से मिलकर बड़ी प्रसन्न हुईं और उसके रहने और खाने पीने की व्यवस्था हेतु इस बच्चे को समीप के गांव सेलू (सेल्यु) के वैंकुशा

आश्रम में ले गई। उस समय इस बच्चे की आयु १५ वर्ष की रही होगी। इस बच्चे से कुछ प्रश्न पूछने के बाद और उसकी प्रतिभा से प्रभावित हो तब वैकुंशा बाबा ने इस बच्चे को अपने आश्रम में प्रवेश दे दिया। बाद में इस बच्चे को उन्होंने अपना शिष्य भी बना लिया। कहते हैं कि वैकुंशा बाबा ने अपनी महासमाधि से पूर्व इस बच्चे को अपनी सारी दिव्य शक्तियां दीं। उसके पश्चात बच्चे को सब 'बाबा' नाम से सम्बोधित करने लगे।

जब यह बच्चा वैंकुशा बाबा के आश्रम में निवास कर रहा था तो एक दिन अत्यंत अप्रिय घटना घटी। वैंकुशा बाबा जब पंचाग्नि तपस्या की तैयारी कर रहे थे, उस समय कुछ मुस्लिम कट्टरपंथी लोग इस बच्चे पर ईंट-पत्थर फेंकने लगे। बच्चे को बचाने के लिए वैंकुशा बाबा सामने आ गए। इस प्रयास में उनके सिर पर एक ईंट लग गई। वैंकुशा बाबा के सिर से रक्त निकलने लगा। इस बच्चे ने तुरंत ही एक कपड़े से उस रक्त को साफ किया। वैंकुशा बाबा ने वही कपड़ा इस बच्चे के सिर पर तीन लपेटे देकर बांध दिया और कहा कि ये तीन लपेटे तुम्हें मुक्ति, ज्ञान एवं सुरक्षा प्रदान करेंगे। जिस ईंट से वैंकुशा बाबा को चोट लगी थी, इस बच्चे ने उसे उठाकर अपनी झोली में रख लिया। इसके बाद इस बच्चे ने जीवन पर्यन्त इस ईंट को अपना सिरहाना बनाया।

स्वस्थ्य होने के पश्चात वैंकुशा बाबा ने इस बच्चे को बताया कि एक बार, ८० वर्ष पूर्व, वह स्वामी समर्थ रामदास गुरुदेव की चरण-पादुका के दर्शन करने के लिए सज्जनगढ़ गए थे। वापसी में वह एक ग्राम शिर्डी में रुके थे। उन्होंने वहां एक मस्जिद के पास नीम के पेड़ के नीचे ध्यान लगाया था। उसी समय समर्थ स्वामी गुरु रामदास जी के उन्हें दर्शन हुए थे। तब समर्थ स्वामी गुरु रामदास जी ने उन्हें बतलाया था कि एक दिन मेरे शिष्यों में से एक शिर्डी में रहेगा जिसके कारण शिर्डी एक तीर्थ क्षेत्र बनेगा। वैकुंशा बाबा ने आगे कहा कि वहीं शिर्डी में मैंने समर्थ स्वामी गुरु श्री रामदास जी की स्मृति में एक दीपक भी जलाया था जो अभी भी वहां नीम के पेड़ के नीचे एक शिला की आड़ में रखा है। इस वार्तालाप के बाद वैकुंशा बाबा ने बच्चे को तीन बार सिद्ध किया हुआ दूध पिलाया। इस दूध को पीने के बाद बच्चे को चमत्कारिक अष्ट-सिद्धि शक्तियों की प्राप्ति हुई और वह एक दिव्य पुरुष बन गए। उन्हें परमहंस होने की अनुभूति हुई। वैंकुशा बाबा के

महासमाधि लेने के पश्चात इस बच्चे ने जिसे अब सब 'बाबा' नाम से सम्बोधित करने लगे थे, इस आश्रम में रुकने का कोई महत्व नहीं समझा और वैंकुशा बाबा के निर्देशानुसार शिर्डी की ओर चल दिए। इस समय उनकी आयु कोई २२-२३ वर्ष के लगभग रही होगी।

शिर्डी पहुँच उन्होंने अपना आसन उसी नीम के पेड़ के तले लगाया जिसका उल्लेख वैंकुशा बाबा ने किया था। कुछ समय वह शिर्डी में रहे, पर एक दिन अदृश्य हो गये।

ऐसा कहा जाता है कि बाबा शिर्डी से निकल पंचवटी गोदावरी के तट पर पहुंचे जहां उन्होंने कुछ समय तक तप किया। यहां बाबा स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी से मिले और उनके आश्रम पर कुछ दिनों निवास किया। तद्पश्चात वह शेगांव जा पहुंचे जहां वे गजानन महाराज से मिले। वहां कुछ दिन रुकने के बाद बाबा देवगिरी के जनार्दन स्वामी की कुटिया पर पहुंचे। वहां कुछ दिन विश्राम करने के बाद वह माणिक प्रभु के आश्रम में माणिक्यापुर चले गए। माणिक प्रभु उस समय के इस क्षेत्र के महान संत थे। उनसे सत्संग प्राप्त कर बाबा बीजापुर होते हुए नरसोबा की वाड़ी पहुंच गए। यहां बाबा ने दत्त अवतार नृसिंह सरस्वती के चरण पादुका के दर्शन किए। यहीं कृष्णा नदी के किनारे एक युवा को तपस्या करते देखा तो उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम बड़े संत बनोगे। यही युवक आगे चलकर वासुदेवानंद सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। वासुदेवानंद सरस्वती ने मराठी में लिखित अपनी पुस्तक 'गुरु चरित्र' में इसका विवरण दिया है।

इसके पश्चात बाबा सज्जनगढ़ पहुंचे जहां समर्थ गुरु स्वामी श्री रामदास जी महाराज की चरण-पादुका के दर्शन किए। वहां से निकलकर विविध सूफी फ़क़ीरों की दरगाह, हिन्दू संतों की समाधि इत्यादि के दर्शन करते हुए बाबा अहमदाबाद पहुंच गए। यहां वह सूफी संत सुहाग शाह बाबा की दरगाह पर कुछ दिन रहे। बाबा अहमदाबाद से भगवान कृष्ण की नगरी द्वारिका जा पहुंचे। यहीं उन्होंने तय किया कि शिर्डी में वे अपने निवास का नाम 'द्वारिकामाई' रखेंगे। द्वारिका से बाबा प्रभास क्षेत्र गए जहां भगवान कृष्ण ने अपनी देह छोड़ी थी।

अब बाबा ने निश्चय कर लिया कि समय आ गया है उनका शिर्डी में प्रवास करने का, अतः वह वापस शिर्डी चल दिए। राह में शिर्डी के पास के ही एक गांव में कुछ समय के लिए वह चाँद पाटिल के घर रहे। उन्हीं दिनों चाँद पाटिल के एक निकट सम्बन्धी की बारात शिर्डी गाँव गयी जिसके साथ बाबा भी आए। कहा जाता है कि चाँद पाटिल के सम्बन्धी की बारात जब शिर्डी गाँव पहुँची तो खंडोबा मंदिर के सामने ही बैल गाड़ियाँ खोल दी गईं, और बारात के लोग वहीं उतरने लगे। वहीं एक श्रद्धालु व्यक्ति म्हालसापति ने तरुण फकीर के तेजस्वी व्यक्तित्व से अभिभूत होकर उन्हें 'साईं' कहकर सम्बोधित किया। धीर धीरे शिर्डी में सभी लोग उन्हें 'साईं बाबा' के नाम से ही पुकारने लगे। इस प्रकार वे 'साईं' नाम से प्रसिद्ध हो गये। विवाह संपन्न हो जाने के बाद बारात तो वापस लौट गयी, परंतु बाबा नहीं लौटे। वह शिर्डी में ही एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में रहने लगे और जीवन पर्यन्त वहीं रहे।

साईं बाबा के शिर्डी निवास, उनके चमत्कार एवं रहन सहन की विस्तृत जानकारी श्री गोविंदराव रघुनाथ दाभोलकर द्वारा लिखित 'श्री साईं सच्चरित्र' पुस्तक से मिलती है। श्री दाभोलकर जी ने इस पुस्तक की रचना सन १९१० में साईं बाबा के जीवन काल से ही प्रारम्भ कर दी थी। सन १९१८ में उनके महासमाधी लेने के पश्चात इस पुस्तक का 'शिर्डी साईं संस्थान' द्वारा प्रकाशन किया गया।

साईं बाबा ने अपने जीवन में सूफी मत के अनुसार 'एकेश्वरवाद' के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उनका नारा था, 'सब का मालिक एक ईश्वर ही है'। अंधविश्वासों के विरुद्ध कर्मकांड इत्यादि से दूर सभी के दुख-दर्द हरना उनके जीवन का क्रम था। समाज के सभी वर्गों, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई में भाईचारा स्थापित हो, यही उनका लक्ष्य रहा।

शिर्डी में साईं बाबा अपना अधिकतर समय हिन्दू संतों एवं मुस्लिम फ़क़ीरों के साथ ही बिताते थे। उन्होंने किसी के साथ कभी भी कोई व्यवहार धर्म के आधार पर नहीं किया। उन्होंने महासमाधी तक नाथ संप्रदाय के नियमों का भी पालन किया। हाथ में जल का कमंडल रखना, धूनी रमाना, हुक्का पीना, कान बिंधवाना, सिर पर चंदन लगाना और भिक्षा पर ही निर्भर रहना, ये सब नाथ पंथी सम्प्रदाय

के संतों की निशानी हैं। साईंबाबा यह सब कर्मकांड करते थे, अतः यह उनका नाथपंथी सम्प्रदाय से लगाव होना प्रमाणित करता है। इसके साथ ही साईं बाबा सिर पर सदैव कफनी बांधते थे। यह सूफी संतों का प्रतीक है जो स्मरण दिलाता रहता है कि एक दिन हम सभी को ईश्वर के पास ही जाना है। वह जीवन भर एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में ही रहे। साईं बाबा पूजा, पाठ, ध्यान, प्राणायाम और योग पर ध्यान न दे, समाज सेवा, विशेषकर निर्धनों की मदद करना, जड़ी-बूटियों एवं भभूती से लोगों की निःशुल्क चिकित्सा करना एवं ईश्वर से प्रेम का ही प्रचार करते थे। भोजन करने से पहले फातिहा भी पढ़ते थे। इस प्रकार वह सूफी संतों द्वारा निर्धारित सभी नियमों का भी पालन करते थे।

सूफी संतों के के सम्मान में स्व-रचित एक कविता प्रस्तुत है।

नेत्र मूँद चिंतन करूँ, चंहु ओर दिखें त्रिसंत ।
मगन होत हिय तब, जब सुमरें नाम श्रीकंत ।।

कहत सनातन धर्म, रट ब्रह्मा विष्णु महेश ।
हृदयपट पर गए समा, सब संतन के नरेश ।।

करजोड़ विनती करूँ, हे त्रिमूर्ति भगवान ।
सदा हिय आदर रहे, हर नर संत समान ।।

करूँ शत शत नमन, निज़ामुद्दीन श्रीसंत ।
धन्य खुसरो अमीर, पा सको उनके मंत ।।

शिष्य रामानंद जी, हे संत कबीर प्रणाम ।
एकेश्वर दयामयी, ज्ञान दियो जन आम ।।

ग़रीब नवाज़ ख़्वाजा, करें दूर सब दुःख ।
जब हिय में उठत, ख़्वाजा प्रेम की भूख ।।

नमन साबिर-पाक, हैं संयम की मिसाल ।
दें लंगर भूखों को, स्वयं खाएं वृक्ष छाल ।।

वंदन शिर्डी साईं, कियो सब धर्मन में मेल ।
दीये जलाए जल से, न दियो बनियन तेल ।।

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री साईं की प्रेरणा से डॉ यतेंद्र शर्मा ने साईं माहात्मय - हिंदी काव्य ग्रन्थ की रचना की है। साधारणतः श्री साई सच्चरित्र पढ़ने/ सुनने में सात दिन तक का समय लग जाता है। आजकल के व्यस्त जीवन में प्राणी इतना समय नहीं निकाल पाता। इस काव्य का पठन/ श्रवण ३० मिनट के अंतर्गत किया जा सकता है, तथा प्रभु साईं की कृपा प्राप्त की जा सकती है। प्रभु साईं से सभी के लिए कुशल मंगल की प्रार्थना के साथ यह काव्य ग्रन्थ आपकी सेवा में उपस्थित है।